जाति, धर्म और लैंगिक मसले

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» सामाजिक असमानता और लोकतंत्र

प्रश्न 1 (आसान). लोकतंत्र के लिए 'सामाजिक विविधता/असमानता' अपने आप खतरा होती है–सही या गलत?
उत्तर – गलत। सामाजिक विविधता अपने आप में खतरा नहीं होती।

प्रश्न 2 (आसान). असमानताएँ राजनीति में उभर सकती हैं–क्यों?
उत्तर – क्योंकि लोग अपने अधिकार और जरूरतों को चुनाव/नीति के जरिए सार्वजनिक रूप से उठाते हैं।

प्रश्न 3 (मध्यम). कब असमानताओं पर आधारित राजनीतिक अभिव्यक्ति लोकतंत्र के लिए लाभकर हो सकती है?
उत्तर – जब वह समान अधिकार, न्याय और सुधार की मांग के लिए हो, जिससे पारदर्शी तरीके से समाधान/नीतियाँ बनें।

प्रश्न 4 (कठिन). एक ही मुद्दा कब 'लाभ' और कब 'नुकसान' बन सकता है? 2 कारण लिखो।
उत्तर – लाभ: (1) मुद्दा अधिकार/समान भागीदारी/नीति सुधार की मांग बने। (2) चर्चा लोकतांत्रिक तरीके से हो, हिंसा/दमन न हो। नुकसान: (1) मुद्दा भेदभाव बढ़ाने या हिंसा कराने लगे। (2) राजनीतिक बहस अधिकारों की जगह सिर्फ घृणा/डिवाइड पर टिक जाए।

» लैंगिक असमानता: जैविक नहीं, सामाजिक भूमिकाएँ

प्रश्न 5 (आसान). लैंगिक असमानता का आधार किस पर टिका होता है–जैविक बनावट या सामाजिक भूमिकाएँ/रूढ़ छवियाँ?
उत्तर – सामाजिक भूमिकाएँ और रूढ़ छवियाँ।

प्रश्न 6 (आसान). 'औरत का मुख्य काम घर चलाना' जैसी सोच को क्या कहेंगे?
उत्तर – रूढ़ छवि/तय सामाजिक भूमिका।

प्रश्न 7 (मध्यम). अगर मर्द घरेलू काम कर सकते हैं फिर भी समाज कहे "ये औरतों का काम है", तो असमानता किस वजह से बढ़ती है?
उत्तर – रूढ़ छवियों और तय भूमिकाओं की वजह से–काम की परिभाषा व मूल्य समाज तय करता है।

प्रश्न 8 (कठिन). घर में महिला अधिक घंटे काम करती है लेकिन सार्वजनिक जगह पर उसकी भूमिका कम दिखती है। इसे 'जैविक' मानना सही है या 'सामाजिक'? तर्क सहित बताओ।
उत्तर – सामाजिक–क्योंकि काम को 'अंदर' मानकर कम मूल्य/कम पहचान दी जाती है, इसलिए असमानता बनती है; जैविक अंतर इसका मुख्य कारण नहीं है।

» निजी बनाम सार्वजनिक का विभाजन (परिवार में श्रम का लैंगिक बँटवारा)

प्रश्न 9 (आसान). परिवार में श्रम के लैंगिक बँटवारे में अक्सर "घर के अंदर का काम" किसे माना जाता है?
उत्तर – अक्सर औरतों/लड़कियों को

प्रश्न 10 (आसान). जब घरेलू काम का श्रेय नहीं मिलता, तो सार्वजनिक जीवन में भागीदारी पर क्या असर पड़ता है?
उत्तर – आमतौर पर अवसर/समय और मनोबल कम हो जाता है, इसलिए भागीदारी घटती है

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर औरत घर में दिनभर काम करती रहे, तो निजी बनाम सार्वजनिक विभाजन कैसे मजबूत होता है?
उत्तर – घर के काम में समय लगने से उसके पास सार्वजनिक/राजनीतिक गतिविधियों के लिए समय-ऊर्जा कम हो जाती है, इसलिए भूमिका 'निजी' क्षेत्र तक सिमटती है

प्रश्न 12 (कठिन). एक परिवार में अगर "बाहर का काम" पैसे कमाने से जुड़ा है और "घर का काम" पैसे से नहीं जुड़ा, तो इससे मूल्यांकन (value) और शक्ति (public life) में क्या अंतर पैदा होता है?
उत्तर – बाहर का काम अधिक मूल्यवान माना जाता है क्योंकि उससे आमदनी/पहचान मिलती है; घर का काम कम मूल्यवान माना जाता है क्योंकि भुगतान/श्रेय नहीं मिलता। इससे सार्वजनिक जीवन और राजनीति में शक्ति/भागीदारी बाहर वाले लोगों की बढ़ती है, यानी अक्सर मर्दों की

» महिला आंदोलन, नारीवाद और सार्वजनिक भागीदारी

प्रश्न 13 (आसान). नारीवाद का मुख्य विश्वास क्या है?
उत्तर – औरत और मर्द के समान अधिकारों और अवसरों में विश्वास।

प्रश्न 14 (आसान). महिला आंदोलनों का एक लक्ष्य बताओ।
उत्तर – महिलाओं के राजनीतिक और वैधानिक दर्जे को ऊँचा उठाना।

प्रश्न 15 (मध्यम). जब महिलाओं के साथ भेदभाव सार्वजनिक तौर पर नहीं उठता, तो उनकी सार्वजनिक भागीदारी क्यों कम हो जाती है?
उत्तर – क्योंकि अधिकार/अवसरों से जुड़े मुद्दे राजनीति में जगह नहीं पाते, इसलिए कानून-नीतियाँ और प्रतिनिधित्व महिलाओं के पक्ष में नहीं बनते।

प्रश्न 16 (कठिन). लैंगिक विभाजन की राजनीतिक अभिव्यक्ति सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भूमिका कैसे बढ़ाती है?
उत्तर – जब इसे राजनीतिक मुद्दा बनाया जाता है, तब राजनीतिक गोलबंदी और नीतिगत बदलाव (जैसे आरक्षण/कानूनी सुधार) होते हैं, जिससे शिक्षा-रोजगार और नेतृत्व जैसी सार्वजनिक जगहों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ती है।

» महिलाओं की स्थिति और प्रतिनिधित्व: अधिकार से परिणाम तक

प्रश्न 17 (आसान). लिंग असमानता के संकेतों में कौन-कौन सी बातें आती हैं?
उत्तर – शिक्षा, काम का मूल्य, मजदूरी, सुरक्षा, हिंसा/जोखिम, और प्रतिनिधित्व।

प्रश्न 18 (आसान). लिंग असमानता का आधार सिर्फ जैविक फर्क क्यों नहीं माना जाता?
उत्तर – क्योंकि रूढ़ छवियाँ और तयशुदा सामाजिक भूमिकाएँ भी कारण बनती हैं।

प्रश्न 19 (मध्यम). कैसे कहा जा सकता है कि अधिकार (rights) और परिणाम (outcomes) एक जैसे नहीं होते?
उत्तर – क्योंकि कानून/अधिकार होने के बावजूद घरेलू बोझ, काम का कम मूल्य, मजदूरी/सुरक्षा की दिक्कतें महिलाओं को शिक्षा/रोज़गार/राजनीति में समान अवसर नहीं दिलातीं, इसलिए प्रतिनिधित्व और प्रभाव बराबर नहीं बनता।

प्रश्न 20 (कठिन). आरक्षण या नारी शक्ति वंदन अधिनियम महिलाओं के लिए "प्रतिनिधित्व" बढ़ाने में कैसे भूमिका निभाते हैं, और इसके परिणाम क्या हो सकते हैं?
उत्तर – आरक्षण सीट/पद तक पहुँच बढ़ाता है, जिससे निर्वाचित निकायों में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ती है। हिस्सेदारी बढ़ने पर उनके हित/प्राथमिकताएँ एजेंडा में आती हैं, और सार्वजनिक फैसलों में प्रभाव बढ़ता है–यानी अधिकार का परिणाम प्रतिनिधित्व और निर्णयों में बदलाव के रूप में दिखता है।

» धर्म, सांप्रदायिकता और धर्मनिरपेक्ष शासन

प्रश्न 21 (आसान). सांप्रदायिकता का एक लक्षण क्या है?
उत्तर – जब धर्म को सामाजिक समुदाय/राष्ट्र का आधार बनाकर राजनीति में निर्णायक बनाया जाए।

प्रश्न 22 (आसान). धर्मनिरपेक्ष शासन में क्या किसी धर्म को विशेष राजकीय दर्जा मिलता है?
उत्तर – नहीं, कोई धर्म राजकीय धर्म के रूप में अंगीकार नहीं किया जाता।

प्रश्न 23 (मध्यम). धर्मनिरपेक्षता का मतलब 'धर्म के खिलाफ' होना है या 'भेदभाव और धर्म-आधारित शासन' के खिलाफ?
उत्तर – धर्मनिरपेक्षता का असली फोकस भेदभाव और धर्म-आधारित राजनीति/शासन के खेल के खिलाफ है; धर्म पालन व प्रचार की स्वतंत्रता रहती है।

प्रश्न 24 (कठिन). एक चुनावी प्रचार में धार्मिक प्रतीकों और डर की भावनात्मक अपील से वोट मांगा जाता है। क्या यह सांप्रदायिकता के किस रूप से मेल खाता है, और क्यों?
उत्तर – यह सांप्रदायिकता के उस रूप से मेल खाता है जिसमें धर्म के प्रतीकों/धर्मगुरुओं/भावनात्मक अपील के जरिए 'अपने' लोगों को जुटाकर दूसरे पर डर बैठाया जाता है–यानी राजनीति में धर्म के आधार पर गोलबंदी।

» जाति-व्यवस्था: वंशानुगत विभाजन और असमानता

प्रश्न 25 (आसान). जाति-व्यवस्था में वंशानुगत विभाजन का मतलब क्या है?
उत्तर – पेशा और भूमिका पीढ़ी-दर-पीढ़ी तय मानी जाती है, यानी काम का विभाजन परिवार के साथ चलता रहता है।

प्रश्न 26 (आसान). जाति-व्यवस्था में छुआछूत का ऐतिहासिक उदाहरण क्या रहा है?
उत्तर – कुछ समूहों के साथ अपमानजनक व्यवहार, विशेषकर 'अंत्यज' जातियों के साथ छुआछूत।

प्रश्न 27 (मध्यम). संविधान के निषेध के बावजूद जाति-आधारित असमानता क्यों बनी रह सकती है? दो कारण लिखिए।
उत्तर – (1) लोग अभी भी ज्यादातर अपनी ही जाति/कबीले में शादी करते हैं, अलगाव बना रहता है। (2) छुआछूत पूरी तरह खत्म नहीं हुई और शिक्षा/संसाधनों में लंबे समय से बना अंतर असर करता रहता है।

प्रश्न 28 (कठिन). मान लीजिए शहरीकरण और शिक्षा का स्तर बढ़ गया है। फिर भी 'जाति-व्यवस्था' का पुराना स्वरूप कुछ हद तक क्यों बचा रह सकता है? 'पेशा+समुदाय+भेदभाव' के आधार पर तर्क दीजिए।
उत्तर – पेशा व समुदाय की पहचान लंबे समय से रिवाजों में जमी रहती है, इसलिए लोग सामाजिक दायरे बदलने में देर लगाते हैं। भेदभाव (जैसे छुआछूत/दूरी) के कारण अवसरों की पहुँच असमान रही, जो शिक्षा व रोजगार में अंतर बनाकर रखती है। शादी/सामाजिक मेल-जोल के नियम भी अलगाव को बनाए रखते हैं, इसलिए बदलाव धीमा होता है।

» राजनीति में जाति: दलगत रणनीति, गोलबंदी और 'जातिवाद'

प्रश्न 29 (आसान). दल चुनाव में जातिगत भावनाएँ उभारते हैं–इसका सीधा मकसद क्या होता है?
उत्तर – समर्थन हासिल करना और लोगों को गोलबंद करके वोट में बदलना।

प्रश्न 30 (आसान). क्या हर जाति का वोट एक ही पार्टी को हमेशा मिल जाता है?
उत्तर – नहीं, कोई भी पार्टी किसी एक जाति के सभी लोगों का वोट हासिल नहीं कर सकती।

प्रश्न 31 (मध्यम). NCERT के अनुसार 'चुनाव सिर्फ जातियों का खेल है' यह धारणा क्यों गलत है? कोई दो कारण लिखो।
उत्तर – क्योंकि किसी एक चुनाव क्षेत्र में किसी एक जाति का बहुमत नहीं होता, और हर जाति के सभी लोग एक ही पार्टी को वोट नहीं देते।

प्रश्न 32 (कठिन). राजनीति 'जाति को भी प्रभावित' कैसे करती है? एक उदाहरणात्मक बिंदु लिखो।
उत्तर – जातियाँ सत्ता/प्रतिनिधित्व चाहती हैं, इसलिए वे पहले जिन उप-जातियों को छोटा/नीचा मानकर बाहर रखती थीं, अब उन्हें साथ लाने की कोशिश करती हैं; यानी राजनीति जातिगत पहचान/व्यवस्था को बदलने की दिशा देती है।

» जाति के अंदर/समाज में असमानता: संसाधन-गरीबी का संबंध

प्रश्न 33 (आसान). ग्रामीण गरीबी रेखा का पैमाना कितना है?
उत्तर – प्रति व्यक्ति प्रति माह 327 रुपए से कम खर्च

प्रश्न 34 (आसान). शहरी गरीबी रेखा का पैमाना कितना है?
उत्तर – प्रति व्यक्ति प्रति माह 455 रुपए से कम खर्च

प्रश्न 35 (मध्यम). डेटा के आधार पर 'हिंदू अगड़ी जातियाँ' में ग्रामीण और शहरी गरीबी रेखा के नीचे प्रतिशत में क्या अंतर दिखता है?

उत्तर – ग्रामीण 11.7% और शहरी 9.9% (दोनों कम, पर ग्रामीण थोड़ा ज्यादा)

प्रश्न 36 (कठिन). क्यों 'औपचारिक असमानताएँ' कम होने के बाद भी जाति के साथ गरीबी का संबंध दिखता रह सकता है? दो कारण लिखो।

उत्तर – (1) संचित प्रभाव: शिक्षा/रोजगार/संसाधनों में पुराना नुकसान पीढ़ियों तक बना रहना। (2) नई असमानताएँ/अवसरों तक असमान पहुँच: जमीन-जायदाद, नेटवर्क और रोजगार के अवसर बराबर न मिलना।

प्रश्न 37 (कठिन). अगर किसी समुदाय का गरीबी रेखा के नीचे प्रतिशत अधिक है, तो राजनीति/निर्णय प्रक्रिया पर इसका संभावित असर क्या हो सकता है?

उत्तर – वे सशक्त प्रतिनिधित्व/नीतियों की माँग ज्यादा कर सकते हैं; साथ ही जाति-आधारित गोलबंदी से ध्यान संसाधन-गरीबी जैसे मुद्दों पर या कभी-कभी उनसे भटक भी सकता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लो किसी राज्य में लंबे समय से महिलाओं को सार्वजनिक पदों में कम मौका मिलता है। एक संगठन चुनावों में महिलाओं के लिए आरक्षण/सुरक्षा/शिक्षा की मांग को बड़ा चुनावी मुद्दा बनाता है। लोकतंत्र के संदर्भ में यह परखना है: क्या यह स्थिति लोकतंत्र के लिए अपने आप खतरा है, या इससे लोकतंत्र को मदद मिल सकती है?

› पहले समझो: सामाजिक असमानता का मतलब यह नहीं कि लोकतंत्र अपने आप बंद हो जाएगा। समाज में भेद रह सकते हैं।

› फिर देखो: राजनीति में मुद्दा बनने से आवाज़ सार्वजनिक होती है और नीति/योजना पर दबाव बनता है।

› अब लाभ बनाम नुकसान: अगर मांग अधिकार, समान भागीदारी और न्याय के लिए है, तो यह लोकतंत्र को मजबूत कर सकती है।

› अगर मुद्दा हिंसा/दमन/भेदभाव बढ़ाने लगे, तो वही लोकतंत्र के लिए नुकसानदेह हो सकता है–तो जाँच 'कैसे' पर होती है।

उत्तर – यह स्थिति अपने आप लोकतंत्र का खतरा नहीं है। अगर महिलाएँ अपने अधिकारों/बराबरी के लिए चुनावी मुद्दे बनाकर सार्वजनिक सुधार की मांग कर रही हैं, तो यह लोकतंत्र के लिए लाभकर हो सकती है; असली फर्क इस बात पर है कि राजनीतिक अभिव्यक्ति न्याय और अधिकार बढ़ाती है या भेदभाव/दमन।

उदाहरण 2. एक परिवार में 7 दिन तक देखा गया: घर के अंदर खाना बनाना, सफाई, कपड़े धोना, बच्चों की देखभाल–ये काम महिला करती है। बाहर दुकान/कारखाने में कमाई का काम पुरुष करता है। अब बताओ: इस स्थिति में लैंगिक असमानता किस कारण से बन रही है–क्या सिर्फ जैविक वजह से, या सामाजिक भूमिकाओं/रूढ़ छवियों से?

› पहले तय करो: सवाल 'काम करने की क्षमता' का नहीं, 'असमानता' का है।

› अगर पुरुष ये घरेलू काम कर सकता है, फिर भी नहीं करता/कम करता–तो वजह क्षमता नहीं होगी।

› देखो कि समाज ने भूमिका तय कर रखी है: 'औरत अंदर', 'मर्द बाहर'।

› देखो कि घरेलू काम को 'कम मूल्य' समझा जा रहा है और इसलिए उसकी पहचान/आमदनी/क्रेडिट नहीं मिल रही।

› इससे निष्कर्ष निकालो कि असमानता का आधार सामाजिक रूढ़ छवियाँ और भूमिकाएँ हैं, जैविक बनावट नहीं।

उत्तर – लैंगिक असमानता यहाँ जैविक कारण से नहीं बन रही। असमानता सामाजिक रूढ़ छवियों और तय भूमिकाओं से बन रही है–जैसे औरत को 'अंदर का काम' और मर्द को 'बाहर का काम/कमाई' मान लिया जाना, और घरेलू काम को कम मूल्य/कम पहचान देना।

उदाहरण 3. आपके परिवार में एक सप्ताह का हिसाब किया जाता है। माँ/बहन लगभग 5 घंटे रोज़ घरेलू काम में लगाती हैं और साथ में 1 घंटे घर के बाहर का छोटा काम (जैसे सिलाई/किराने की गिनती) भी करती हैं, लेकिन उन्हें कोई भुगतान/श्रेय नहीं मिलता। पापा/भाई 6 घंटे रोज़ कमाई वाले काम में लगाते हैं और उनके लिए सार्वजनिक जगह (बैठक/चुनाव में भागीदारी) के लिए समय बच जाता है। बताइए, निजी बनाम सार्वजनिक का विभाजन यहाँ कैसे बन रहा है और इसका राजनीति/सार्वजनिक जीवन पर क्या असर पड़ेगा?

› देखो घरेलू काम (खाना, सफाई, देखरेख) का बड़ा हिस्सा औरतों के जिम्मे है–यानी श्रम का लैंगिक बँटवारा

› क्योंकि घरेलू काम 'घर' तक सीमित है, उसे कम मूल्यवान/कम श्रेय वाला माना जाता है

› फिर औरतों का समय और ऊर्जा घर के काम में खपत होती है

› नतीजा: सार्वजनिक/राजनीतिक गतिविधियों के अवसर और भागीदारी घटती है, जबकि बाहर का सार्वजनिक जीवन मर्दों के कब्जे में जाता है

उत्तर – यहाँ निजी बनाम सार्वजनिक का विभाजन इस तरह बन रहा है कि घरेलू श्रम औरतों के हिस्से में है और उसे कम मूल्य/कम श्रेय दिया जाता है। इससे औरतों के पास सार्वजनिक जीवन/राजनीति के लिए समय और अवसर कम रहते हैं, इसलिए भागीदारी घटती है और सार्वजनिक क्षेत्र में मर्दों की भूमिका बढ़ जाती है।

उदाहरण 4. मान लो एक गांव में महिलाओं का घरेलू काम बहुत है, पर चुनाव में महिला प्रतिनिधि कम हैं। बताओ–महिला आंदोलन/नारीवाद इस समस्या को सार्वजनिक भागीदारी के जरिए कैसे बदलने की कोशिश करेगा? कम से कम 3 बदलाव बताओ।

› पहले कारण पहचानो: महिलाओं की भूमिका घर तक सीमित मान ली जाती है, इसलिए उनकी सार्वजनिक आवाज़ कम होती है।

› फिर लक्ष्य तय करो: समान अधिकार/अवसर और राजनीतिक-वैधानिक दर्जे में सुधार।

› अगला कदम: निर्वाचन संस्थाओं में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए आरक्षण/कानूनी व्यवस्था की मांग।

› अंत में असर: पंचायत/नगरपालिका/विधानसभा में महिलाएँ फैसलों में हिस्सा लेंगी, जिससे उनकी जरूरतें सार्वजनिक होंगी।

उत्तर – महिला आंदोलन/नारीवाद (1) समान अधिकार और अवसर की मांग करेगा, (2) महिलाओं के राजनीतिक व वैधानिक दर्जे को सुधारने के लिए कानून/नीतियों में बदलाव मांगेगा, और (3) चुनावी संस्थानों में महिलाओं के लिए आरक्षण/हिस्सा बढ़ाने की मांग करेगा–जिससे सार्वजनिक फैसलों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी और उनकी जरूरतें सुनी जाएंगी।

उदाहरण 5. किसी जिले में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में सुधार होने के बाद भी पंचायत में महिलाओं की भूमिका पहले जैसी कम है। कारण समझाने के लिए बताओ कि "अधिकार से परिणाम तक" की सोच के हिसाब से किन 3 क्षेत्रों में अंतर ढूँढना चाहिए, और कैसे आरक्षण/कानूनी प्रावधान महिलाओं की प्रतिनिधित्व बढ़ाकर परिणाम ला सकते हैं?

› पहला क्षेत्र: समय/भूमिका का असमान बँटवारा–शिक्षित होने के बाद भी घरेलू काम का बोझ महिलाओं की सार्वजनिक भागीदारी घटा सकता है।

› दूसरा क्षेत्र: आर्थिक मूल्य और मजदूरी–महिलाओं का काम कम मूल्य का माना जाए तो स्वतंत्रता/आत्मविश्वास और संसाधन सीमित रह सकते हैं।

› तीसरा क्षेत्र: सुरक्षा और हिंसा का जोखिम–चुनाव/बैठकों/यात्रा में असुरक्षा प्रतिनिधित्व कम कर सकती है।

› फिर जोड़ो: आरक्षण/कानूनी प्रावधान सीटों तक पहुँच बढ़ाते हैं। जैसे-जैसे महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ती है, उनकी आवाज़ फैसलों में आती है–पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, बाल-सुरक्षा जैसी प्राथमिकताएँ बढ़ सकती हैं।

उत्तर – असमानता के संकेत ढूँढो–(1) घरेलू काम/समय का बोझ, (2) काम का मूल्य/मजदूरी का अंतर, (3) सुरक्षा/हिंसा का जोखिम। आरक्षण और कानूनी प्रावधान महिलाओं की निर्वाचित निकायों में हिस्सेदारी बढ़ाकर सार्वजनिक निर्णयों में उनका प्रभाव बढ़ाते हैं–यानी अधिकार से परिणाम तक का रास्ता बनता है।

उदाहरण 6. मान लो चुनाव के समय एक नेता लोगों से कहता है: "केवल हमारे धर्म के लोग ही इस देश के असली नागरिक हैं। इसलिए शासन भी हमारे धर्म के हिसाब से चलेगा। दूसरे धर्म के लोगों को इस फैसले में शामिल नहीं किया जाएगा।" बताइए यह बात सांप्रदायिक सोच से कैसे जुड़ती है, और धर्मनिरपेक्ष शासन इसके बारे में क्या करेगा?

› पहले पहचानो–यहाँ धर्म को नागरिकता/समुदाय का आधार बनाया जा रहा है ('असली नागरिक')।

› दूसरा–शासन को धर्म-विशेष के हिसाब से चलाने की बात है, यानी धर्म को राजनीति में निर्णायक बनाना।

› तीसरा–दूसरे धर्म के लोगों को राजनीतिक फैसलों से बाहर रखना/दबाना–यह सांप्रदायिक दमन वाली सोच है।

› अब धर्मनिरपेक्ष शासन के सिद्धांत लगाओ: विशेष राजकीय धर्म नहीं होता; धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं चलता; और नागरिकों की समानता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हस्तक्षेप हो सकता है।

उत्तर – यह भाषण सांप्रदायिक सोच से जुड़ा है क्योंकि यह धर्म को नागरिकता और शासन का आधार बनाता है, दूसरे धर्म वालों को शामिल नहीं मानता और दबाने की मानसिकता दिखाता है। धर्मनिरपेक्ष शासन इसके खिलाफ होगा–किसी धर्म को विशेष दर्जा नहीं देगा, धर्म के आधार पर भेदभाव रोकेगा और समान नागरिकता/बराबरी सुनिश्चित करने के लिए जरूरी कदम उठाएगा।

उदाहरण 7. मान लो किसी गाँव में दो जाति-समूह A और B हैं। A के लोग सदियों से किसी खास पेशे में हैं, शिक्षा का चलन पहले से रहा है, और उनके बच्चे आसानी से पढ़ाई/नौकरी तक पहुँचते हैं। B को पहले शिक्षा से वंचित रखा गया, छुआछूत जैसी प्रथाओं के कारण सामाजिक दूरी रही, और आज भी शादी ज़्यादातर अपने ही समूह में होती है। बताइए: दिए गए बिंदुओं के आधार पर जाति-व्यवस्था असमानता को कैसे बनाए रखती है?

› वंशानुगत पेशा पहचानें: A/B में पेशा परंपरा से तय है, इसलिए अवसर/तरीका एक दिशा में चलता है।

› समुदाय-आधारित पहचान देखें: दोनों समूहों को अलग सामाजिक समुदाय माना जाता है।

› भेदभाव का ऐतिहासिक असर जोड़ें: B के साथ छुआछूत/दूरी रही, जिससे सामाजिक संसाधनों तक पहुँच घटती है।

› पीढ़ियों तक बने रहने वाला कारण बताएं: शादी अपने ही समूह में होने से अलगाव जारी रहता है।

› शिक्षा-आर्थिक असमानता समझें: A को पहले से शिक्षा का फायदा, B को देर से/कम अवसर–इससे आर्थिक हैसियत का gap बढ़ता है।

› निष्कर्ष लिखें: संविधान/आधुनिक बदलावों के बाद भी ये संरचनात्मक कारण असमानता को कम होने नहीं देते।

उत्तर – जाति-व्यवस्था वंशानुगत पेशा और समुदाय-आधारित पहचान के जरिए अवसरों को पीढ़ियों तक एक ही दिशा में चलाती है; छुआछूत/भेदभाव से B की सामाजिक-शैक्षिक पहुँच घटती है; और शादी अपने ही समूह में होने से अलगाव बना रहता है। इसलिए शिक्षा व आर्थिक स्थिति में अंतर बढ़ता है और असमानता टिकती रहती है, भले ही कानून बराबरी की तरफ हो।

उदाहरण 8. मान लो एक संसदीय क्षेत्र में किसी एक जाति की आबादी 40% है। क्या यह मानना सही है कि किसी भी पार्टी के लिए जीत सिर्फ उसी जाति के वोट पर टिकी होगी? 4 तर्कों की मदद से बताइए कि चुनाव सिर्फ 'जातियों का खेल' नहीं होता।

› देखो: 40% का मतलब है 60% मतदाता उस जाति के नहीं हैं–इसलिए बहुमत नहीं बनता।

› अगर बहुमत नहीं है तो जीत के लिए दूसरी जातियों/समुदायों का भरोसा भी चाहिए।

› यह भी मानना गलत है कि उस 40% जाति के सारे लोग एक ही पार्टी को वोट देंगे।

› अंत में, प्रदर्शन/सरकार का काम, नेतृत्व की लोकप्रियता और आर्थिक हित जैसे कारक वोट बदल सकते हैं, इसलिए सीट पर हार-जीत केवल जातीय गणित से तय नहीं होती।

उत्तर – नहीं, यह मानना सही नहीं है। जब एक जाति का बहुमत नहीं होता, तब हर पार्टी को एक से ज्यादा जाति/समुदायों का समर्थन चाहिए; हर जाति के लोग एक ही पार्टी को हमेशा वोट नहीं देते और सत्ता/नेताओं का रिकॉर्ड व अन्य मुद्दे चुनाव परिणाम को प्रभावित करते हैं। इसलिए चुनाव सिर्फ 'जातियों का खेल' नहीं है।

उदाहरण 9. NCERT के अनुसार गरीबी रेखा के नीचे रहने का अर्थ ग्रामीण में प्रति व्यक्ति प्रति माह 327 रुपए से कम और शहरी में 455 रुपए से कम खर्च करना है। अगर किसी गाँव के परिवार का प्रति व्यक्ति खर्च 300 रुपए है, तो वह 'गरीबी रेखा के नीचे' माना जाएगा। बताओ: (i) क्या 300 रुपए ग्रामीण में गरीबी रेखा के नीचे है? (ii) एक शहर के व्यक्ति का खर्च 480 रुपए हो, तो वह गरीबी रेखा के नीचे माना जाएगा या नहीं?

› ग्रामीण के लिए सीमा याद करो: 327 रुपए/माह से कम
› 300 रुपए < 327 रुपए, इसलिए ग्रामीण में गरीबी रेखा के नीचे
› शहरी के लिए सीमा याद करो: 455 रुपए/माह से कम
› 480 रुपए < 455 रुपए नहीं है, इसलिए शहरी में गरीबी रेखा के ऊपर

उत्तर – (i) हाँ, 300 रुपए/माह ग्रामीण में गरीबी रेखा के नीचे है। (ii) नहीं, 480 रुपए/माह शहरी में गरीबी रेखा के नीचे नहीं है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- बोर्ड में 'लाभकर/नुकसानदेह' का फर्क समझाकर लिखो–यह "कैसे" वाली बात है।
- उत्तर लिखते समय कारण जरूर लिखना: रूढ़ छवियाँ + तय भूमिकाएँ।
- उत्तर में "समय/मूल्यांकन/श्रेय" की चेन लिखो–यही मार्क्स दिलाती है।
- 2023 के महिला आरक्षण अधिनियम जैसे उदाहरण जोड़कर "राजनीतिक/वैधानिक दर्जा" पॉइंट जरूर लिखो।
- उत्तर में 'अधिकारअवसरप्रतिनिधित्वनिर्णय' क्रम ज़रूर लिखो।
- धर्मनिरपेक्षता के 4 बिंदु (राजकीय धर्म नहीं, स्वतंत्रता, भेदभाव निषेध, आवश्यक हस्तक्षेप) याद करके लिखो।
- उत्तर में 'वंशानुगत पेशा', 'समुदाय पहचान', 'छुआछूत', 'आधुनिक बदलाव के बावजूद टिकाव' जरूर लिखो।
- उत्तर में 'चार कारण' (बहुमत नहीं, सभी वोट नहीं, उम्मीदवार अलग-अलग, सत्ता की हार) जरूर लिखो।
- डेटा-आधारित 2-3 तुलना (ST/SC/अगड़ी) लिखकर कारण (संचित प्रभाव, अवसर) जोड़ो।

एक नज़र में रिवीज़न

› - असमानता खतरा; असली फर्क "कैसे" मुद्दा बनता है।
› - "जैव नहीं, सोच है"–रूढ़ छवियाँ असमानता बनाती हैं।
› - निजी (घर) में श्रम, सार्वजनिक (राजनीति) में भागीदारी कम
› - आंदोलन + कानून = सार्वजनिक भागीदारी
› - संकेत पहचानो: शिक्षा- मजदूरी- सुरक्षा- प्रतिनिधित्व
› - धर्मनिरपेक्ष: विशेष धर्म नहीं, भेदभाव नहीं, बराबरी के लिए हस्तक्षेप
› - जाति = काम + पहचान + भेदभाव + पीढ़ी
› - जाति: रणनीति+गोलबंदी, पर चुनाव सिर्फ जाति नहीं
› - गरीबी रेखा: 327 (ग्रामीण), 455 (शहरी) और % तुलना